(3) गंगा का मैदान

लम्बाई – 1400 km (15)
चौड़ाई – 140 km – 500 km
क्षे० – 3.75 लाख km

* यह भारत का सबसे बड़ा मैदानी भाग है। जिसकी लम्बाई – लगभग 1400 km
- चौड़ाई – 140 – 500 km
यह मैदानी भाग विस्तृत है – "दिल्ली से कलकत्ता" तक।

L – 1400 km
B – 140 – 500 km
Area – 3.75 L km²

गंगा के मैदान का विस्तार पाँच राज्यों में है – उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड (साहेबगंज जिला), पश्चिम बंगाल।

* इस मैदानी भाग का क्षे० – 3.75 लाख km
इस मैदानी भाग की मुख्य नदी – गंगा,
सहायक नदियाँ ⟶
(A) हिमालय से – यमुना, गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी, महानंदा
(B) प्रायद्वीपीय भाग से – चंबल, बेतवा, केन, सोन, आदि

इस मैदानी भाग की सामान्य ढाल – पूरब, और दक्षिण-पूरब की ओर

गंगा का मैदान तीन भागों में बँटा है –

(A) ऊपरी गंगा का मैदान ⇒ यह मैदानी भाग मुख्यतः 'उत्तरांचल' और पश्चिमी उत्तरप्रदेश में।

फैला → उत्तरांचल + पश्चिमी उत्तरप्रदेश
L – 550 km
B – 380 km
Area – 1.49 Lakh sq. km
रचना → भाबर, भूड़
ढाल – 25 cm/km

इस मैदान के – उत्तर में → शिवालिक श्रेणी
दक्षिण में → प्रायद्वीप पठार की सीमा
पश्चिम में → यमुना नदी

इस मैदान की लम्बाई – 550 km (पश्चिम से पूर्व की ओर)
चौड़ाई – 380 km (उत्तर से दक्षिण की ओर)
क्षेत्रफल – 1.49 लाख km

* इस मैदान का औसत ढाल – 25 cm/km
* ऊपरी गंगा के मैदान में इन नदियों का जल प्रवाह होता है – गंगा + यमुना + रामगंगा + शारदा + गोमती + घाघरा

* इस क्षेत्र की विशिष्ट रचना – भाबर, भूड़ आदि

⇒ इस मैदान के पश्चिमी भाग में - 'गंगा-यमुना का दोआब'। इस दोआब के पूर्व अवस्थित है - रुहेलखंड, अवध का मैदान

⇒ अवध की मैदान के प्रमुख नदी - घाघरा यहाँ इसी नदी से बाढ़ आती है।

(B) मध्य गंगा का मैदान :- इसके अन्तर्गत आते हैं - पूर्वी U.P + उत्तर बिहार

⇒ इस मैदान के उत्तर में - शिवालिक श्रेणी
दक्षिण में - प्रायद्वीप पठार (छोटानागपुर का पठार)

⇒ मध्य गंगा के मैदान की लम्बाई —
पूर्व - पश्चिम - 600 k.m
चौड़ाई - उत्तर - दक्षिण - 330 k.m

⇒ मध्य गंगा के मैदान में - घाघरा, गंडक और कोसी नदियों के मंद प्रवाह के कारण यहाँ सर्वाधिक मोटी जलोढ़ की परत है (2000 m पश्चिमी मध्यभाग में)

⇒ इस मैदानी भाग की मुख्य रचना - गोखुर झीलें, दलदल, ताल, आदि

⇒ भारत में सर्वाधिक खादर 'मध्य गंगा के मैदानी' भाग में है।

⇒ इस भाग में विश्व की सर्वाधिक मार्ग परिवर्तन करने वाली नदी, - कोसी विनाशक बाढ़ वाली नदी - कोसी
अतः कोसी को कहा जाता बिहार की शोक नदी, भारत की शोक नदी।

Note:- विनाशक बाढ़ वाली विश्व प्रमुख नदियाँ है -
ह्वांगहो (चीन की शोक नदी), पो (इटली की शोक), मिसीसिपी (अमेरिका की शोक), दामोदर नदी (बंगाल की शोक)

कोसी

पूर्वी U.P + N. Bihar
L = 600 km
b = 330 km

रचना - गोखुर झील, दलदल, ताल

ढाल → 45 cm/km

सर्वाधिक जलोढ़ परत - 2000 m
(प. मध्यभाग)

मध्य गंगा के मैदान में कई दोआब क्षेत्र हैं ⇒

(A) गंगा-घाघरा का दोआब → चावल + गन्ना का उत्पादन

(B) घाघरा-गंडक का दोआब – चावल, गन्ना + मसाले का उत्पादन

(C) गंडक-कोसी का दोआब – यही कहलाता है – (मिथिला का मैदान)

मिथिला का मैदान –

⇒ मिथिला के मैदान की विशिष्ट उपज – मखाना

(D) कोसी-महानंदा दोआब – जूट

इस मैदानी भाग में दक्षिण की ओर से मिलने वाली नदी – सोन (रामपुर के पास गंगा से मिलती)

मध्य गंगा के मैदान की ढाल – 45 cm/km

किन्तु मिथिला के मैदान में इसकी न्यूनतम भाग – 6 cm/km

(c) निम्न गंगा का मैदान :⇒ यह गंगा के मैदान का सबसे पूर्वी भाग है।

Bihar(Kishanganj) + W.B.

l – 580 km (N–S)

b – 200 km (E–W)

Area – 81000 वर्ग km

ढाल – 2 cm/km

⇒ इसका विस्तार – बिहार के किशनगंज जिले से लेकर सम्पूर्ण पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश का अधिकांश भाग

⇒ अपवाद – पुरुलिया का पहाड़, दार्जिलिंग की पहाड़ी।

⇒ गंगा की निम्न मैदान की लंबाई – 580 km (उत्तर से दक्षिण, दार्जिलिंग से बंगाल की खाड़ी तक)

⇒ चौड़ाई – 200 km से अधिक (पूरब से पश्चिम – छोटानागपुर के पठार से बांग्लादेश तक)

⇒ इस मैदान की न्यूनतम चौड़ाई – राजमहल से बांग्लादेश तक सिर्फ 16 km.

⇒ क्षेत्र – 81000 वर्ग km

⇒ इस मैदानी भाग का जलोढ़ जमा हुआ है – तिस्ता + जलढाका + तोरसा + कोसी + महानन्दा + स्वर्णरेखा नदी

⇒ इस मैदान की ढाल – 2 cm/km

⇒ इस मैदान के दक्षिणी छोर पर अवस्थित है – सुन्दरवन का डेल्टा ⇒ इसका निर्माण

गंगा + ब्रह्मपुत्र के द्वारा विस्तार पश्चिम बंगाल से बांग्लादेश तक

क्षे० – 1,25000 वर्ग K.m

→ विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।

→ यह निम्न कारणों से प्रसिद्ध है —

(A) विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा

(B) Royal Bengal tiger का सबसे बड़ा प्राकृतिक अभयारण्य है।

(C) यहाँ सुन्दरी प्रजाति के 'मैंग्रोव' वनस्पति की बहुलता है अतः सुन्दरवन कहलाता है।

(D) इस डेल्टा के नदीय भाग में साल में तीन बार चावल की खेती होती है – बोरो, औस, अमन